साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, कार्तिक पूर्णिमा, 28 नवंबर, 2012 वर्ष 42 अंक 6

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

नगरं यथा पच्चन्तं, गुत्तं सन्तरबाहिरं।
एवं गोपेथ अत्तानं, खणो वो मा उपच्चगा।
खणातीता हि सोचन्ति, निरयम्हि समप्पिता॥

धम्मपद- ३१५, निरयवग्गो

जैसे (कोई) सीमावर्ती नगर भीतर-बाहर से (खूब) रक्षित होता है, वैसे ही अपने आपको रक्षित रखे। क्षण भर भी न चूके, क्योंकि क्षण भर को भी चूके हुए लोग नरक में पड़ कर शोक करते हैं।

सत्कर्मों से सद्गति

किसी गांव के एक मुखिया ने भगवान बुद्ध से पूछा कि लोग सुगति प्राप्त करने के लिए बहुत से कर्मकांड करते हैं, अनेक प्रकार की वेश-भूषा, माला-गंध-विलेपन धारण करते हैं, अनेक प्रकार से अग्निपरिचर्या व अन्य कर्मकांड करके समझते हैं कि हमने सब कुछ कर लिया। कुछ ऐसे भी हैं जो निम्न कोटि की तांत्रिक साधना करके किसी प्रेत-प्रणी से बात करते हैं और उसके द्वारा लोगों को स्वर्ग ले जाने का दावा करते हैं। भगवान आप तो सर्वज्ञ हैं। आप भी कुछ ऐसा करें जिससे कि संसार के समस्त प्राणी मरणोपरांत सुगतिमय स्वर्गलोक में ही जा सकें।

भगवान ने उससे ही प्रश्न पूछ कर समझाने का प्रयत्न किया। तुम क्या समझते हो कि कोई व्यक्ति जीव-हिंसक हो, चोरी करता हो, व्यभिचारी हो, असत्यभाषी हो, चुगलखोर हो, कर्कशभाषी (रूखा) हो, गप्पी हो, लोभी हो, नीचवृत्ति का हो, मिथ्यादृष्टियुक्त हो, तो क्या वह स्वर्ग में जाने लायक है? अथवा उसके मर जाने पर बहुत से लोग वहां एकत्र होकर प्रार्थना करें, हाथ जोड़कर वंदना करें कि आप सुगतिगामी हों, स्वर्गलोक में उत्पन्न हों तो क्या ऐसा करने पर वह स्वर्गलोक में उत्पन्न हो सकता है? नहीं, मरणोंपरांत किया जाने वाला कोई भी कर्मकांड किसी को मुक्ति नहीं दे सकता। यह असंभव है।

एक उदाहरण से समझो। किसी बड़े जलाशय में कोई बड़ी पत्थर की शिला छोड़ दे और वह अपने भार से पानी में डूब जाय। तो क्या समझते हो कि किसी विशाल जनसमूह के प्रार्थना करने, मनौती मनाने और पूजा-पाठ या कोई अन्य कर्मकांड करने से क्या वह भारी शिला पानी पर तैरने लगेगी?

ऐसे ही कोई व्यक्ति घी-तैल से भरे हुए घड़े को पानी में लाकर फोड़ दे और उसका घी, तैल पानी पर तैरने लगे और किसी दूसरे घड़े में कंकड़-पत्थर भर कर उसे भी फोड़े और वे अपने भार से पानी में डूब जायँ। तब कोई प्रार्थना करके, पूजा-पाठ करके, कर्मकांड करके कहे कि ऐ घी तुम नीचे चले जाओ, नीचे चले जाओ! ऐ कंकर-पत्थर तुम ऊपर आ जाओ, ऊपर आ जाओ! यदि ऐसा होता हो तो करके देखो।

हे ग्रामणी! इसी प्रकार कोई व्यक्ति यदि प्राणीहिंसा से, चोरी से, व्यभिचार, असत्यभाषण आदि दुष्कर्मों से विरत रहता है और सत्यधर्म का जीवन जीता है तो मरणोपरांत वह ऊपर ही जायगा। उसकी ऊर्ध्वगति ही होगी। किसी का श्राप उसे नरक के कष्टमय जीवन में नहीं भेज सकता। उसका सत्कर्म ही उसे ऊपर ले जायगा। उसे ऊपर की ओर जाने से कोई नहीं रोक सकता। यह प्रकृति का अटूट नियम है।

ऐसे ही किसी अन्य प्रसंग पर भगवान से पूछा गया कि भगवान क्या आप सब पर समान रूप से करुणाभाव रखते हैं, दयाभाव रखते हैं? यदि हां, तो किसी को बहुत लाभ होता है, किसी को मध्यम लाभ होता है और कोई-कोई धर्मलाभ से वंचित ही रह जाता है, ऐसा क्यों? आपकी मंगलमय करुणा का प्रभाव सब पर एक जैसा क्यों नहीं होता?

भगवान ने उसे एक किसान का उदाहरण देकर समझाया कि उसके पास तीन प्रकार की जमीन है-- १) बहुत उपजाऊ, २) मध्यम उपजाऊ, ३) बिल्कुल ऊसर-बंजर। ऐसे में वह सबसे पहले उपजाऊ जमीन में बीज डालता है, उसके बाद मध्यम में और सबसे अंत में ऊसर-बंजर जमीन में। बीज वही होता है और उतनी ही मेहनत व लगन से डाला जाता है। लेकिन फसल एक सी नहीं होती। इसी प्रकार मेरे पास भी तीन प्रकार के लोग धर्म सीखने आते हैं। एक तो बहुत गंभीर साधक-साधिकाएं, जो उपजाऊ जमीन के समान हैं। उनमें जो बीज पड़ेगा, तुरंत फलदायक होगा। क्योंकि वे पूरी श्रद्धा और लगन के साथ काम में लग जाते हैं। दूसरे सामान्य गृहस्थ उपासक-उपासिकाएं, जो अपने दैनिक सांसारिक कार्यों में लगे रहते हुए भी धर्म सीखते हैं। वे मध्यम खेत के समान हैं। उनमें श्रद्धा और लगन तो है परंतु जीवन-जगत की अनेक बाधाएं भी हैं। फिर भी वे धर्ममार्ग पर चल कर अपना मंगल साधते ही हैं। तीसरे कुछ ऐसे लोग जो ऊसर-बंजर जमीन जैसे हैं। उपदेश तो उन्हें भी मैं वैसे ही देता हूं, परंतु अपने कर्मकांडों और अन्य जंजालों में उलझे होने के कारण वे धर्म को ठीक से ग्रहण नहीं कर पाते। वे जितना सीख लें, समझ लें और जितना अभ्यास कर लें, उन्हें केवल उतना ही लाभ होता है। कोई-कोई केवल सुन कर चला जाता है, जरा भी अभ्यास नहीं करता तो वह धर्म से सर्वथा वंचित रह जाता है। परंतु मेरी करुणा उन सब के प्रति सदैव उतनी ही रहती है।

भगवान ने एक और उदाहरण देकर समझाया कि किसी के पास तीन घड़े हों। एक बिल्कुल छिद्ररहित, दूसरा सूक्ष्म छिद्रों वाला और तीसरा बड़े छिद्र वाला। वह सबसे पहले बिना छिद्र वाले घड़े में पानी भरता है, जो दिन भर उसके काम आता है। फिर दूसरे में भरता है कि भले दिन भर न चले, पर कुछ समय तक तो उससे जल मिलता ही है। तीसरा घड़ा वह इसलिए भरता है कि जितना भी पानी एकत्र हो जाय वह नहाने अथवा कपड़ा-बर्तन धोने के काम आ जाय।

बहुत गंभीर साधक-साधिकाएं पहले घड़े के समान हैं। दूसरे घड़े के समान वे सामान्य उपासक-उपासिकाएं हैं जो कठिनाई होते हुए भी धर्म को धारण करते हैं। अन्यान्य कर्मकांडों में उलझे हुए लोग वैसे ही हैं जैसे तीसरे घड़े में भरा हुआ पानी। वे जितना ग्रहण कर लें, अभ्यास कर लें, उन्हें बस उतना ही लाभ होगा। यद्यपि मेरी दया और करुणा तो सब के प्रति समान ही रहती है।

भगवान द्वारा उपदेशित इन उदाहरणों से सबक लेकर साधको! आओ, हम भी धर्ममार्ग पर उपजाऊ क्षेत्र बन कर, श्रद्धा और लगन के साथ पांचों शीलों का कड़ाई से पालन करते हुए, सम्यक समाधि को पुष्ट करें और अनित्यबोधिनी प्रज्ञा का गहराई से अभ्यास करते हुए अपने सदाचरण के बल पर अपनी सुगति निश्चित करें। इसी में हमारा मंगल है, कल्याण है!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

उद्‌बोधन

(धम्म-विपुल विपश्यना केंद्र, वाशी के उद्‌घाटन-शिविर के अवसर पर दि. ४-३-२०१२ को दिये गये पूज्य गुरुदेव के प्रवचन का संक्षिप्त अंश)

धर्म का स्थान धर्म की साधना करने से ही मंगलमय होता है। अच्छा आश्रम बन गया। इतने साधक-साधिकाओं ने एकत्र होकर के साधना का काम शुरू किया है। यह केंद्र भी अन्य सभी केंद्रों की भांति खूब फैलेगा, खूब लोक कल्याण करेगा। आवश्यक है कि व्यक्ति-व्यक्ति में धर्म जागे। व्यक्ति-व्यक्ति धर्म में पुष्ट हो। इन केंद्रों में लोग तपने आएंगे। यह कोई कर्मकांड नहीं है कि हमने तपोभूमि पर जाकर दस दिन बिता दिये, अब तो हम बदल जाएंगे, मुक्त हो जाएंगे।

धर्म की अपनी मर्यादा है। इस मर्यादा का पालन करना है। मर्यादा यही है कि धर्म जीवन में उतरे। जो व्यक्ति अपना ही मंगल नहीं कर सका, वह औरों का क्या मंगल करेगा? इसलिए किसी पर भी अहसान करने के लिए नहीं, किसी पर कृपा करने के लिए नहीं। हर व्यक्ति को अपने भले के लिए, अपने कल्याण के लिए धर्म में खूब पकना चाहिए। धर्म में पक कर जब अपना भला होने लगे, तभी औरों का भला होने में सहायक बन सकते हैं। एक व्यक्ति स्वयं तो पके नहीं और केवल चाहे कि सारी दुनिया विपश्यना करने लगे, ऐसा नहीं होता। पहले स्वयं देखे कि मेरे भीतर धर्म कितना फैल रहा है। मेरे भीतर फैल रहा है तो बाहर फैलना आसान हो जायगा।

कहीं ऐसा न हो कि दस-बीस-पचास या सौ बरस बाद लोग यह कहने लगें कि यहां कोई तपस्या हुआ करती थी। यहां कोई एक केंद्र था, उसका अमुक-अमुक आचार्य हुआ करता था-- ऐसा गलत इतिहास न बने। धर्म खूब फैले और धर्म तब फैलेगा जब व्यक्ति-व्यक्ति में धर्म जागेगा। यह धर्म जगाने का स्थान है। अपने भीतर धर्म में पकने का स्थान है। अपने कल्याण के लिए, अपने भले के लिए और इस प्रकार औरों के कल्याण के लिए, औरों के भले के लिए।

धर्म के रास्ते चलते हुए किसी भी व्यक्ति के मन में रंचमात्र भी यह भाव आये कि इस पर तो मेरा प्रभुत्व होना चाहिए। यह केंद्र मैंने बनाया। इस केंद्र को बनाने में मैंने कितना सहयोग दिया। यह केंद्र मेरे हाथ में रहे। तो बेचारे को धर्म समझ में नहीं आया। धर्म का केंद्र है। महत्त्व धर्म का हो। जहां इसका ह्रास होने लगा, वहां धर्म डूबने लगा। स्थान-स्थान पर, समय-समय पर धर्म के जो बड़े काम हुए, इतिहास कहता है कि वहां-वहां पर अगर पतन हुआ तो क्यों हुआ? एक आदमी, दो आदमी, दस आदमी - ये मेरे हाथ में आ जाय। मैं मालिक बन जाऊं। धर्म के दुश्मन हैं ऐसे लोग।

भाव यही हो कि लोग जैसे तप रहे हैं, वैसे मैं भी तपूं। मुझे देख कर और लोग भी तपें। बस तपने की ही बात। प्राप्ति की बात नहीं, कि इसकी वजह से मुझे क्या मिला? कोई व्यक्ति सेवा करता है, कोई दान देता है, कोई धर्म सिखाता है और बदले में कुछ चाहता है तो धर्म के क्षेत्र में निकम्मा आदमी है। प्रसन्नता इसी बात में हो कि लोक-कल्याण हो रहा है कि नहीं! बस एक ही बात कि लोक-कल्याण हो रहा है। हम तो सेवक हैं, सेवा देने वाले हैं।

मैं जानता हूं सारे विश्व में इतनी बड़ी संख्या में साधक हैं। कितनी लगन से काम करते हैं। कितनी लगन से धर्म फैला रहे हैं। कैसे फैला रहे हैं - अपने जीवन में उतारते हुए। लोग देखते हैं, अरे, यह व्यक्ति कैसा था? विपश्यना साधना करने से कैसे बदल गया। बदल गया तो उसे देख कर लोग विपश्यना की ओर आकर्षित होते हैं। धर्म की ओर आकर्षित होते हैं। कोई संप्रदाय बांधने के लिए नहीं, कोई पॉलिटिकल पार्टी खड़ी करने के लिए नहीं। कोई अपना प्रभुत्व जमाने के लिए नहीं। जो लोग आते हैं, उनका कल्याण होता है। यही देख कर मन प्रसन्न होता है। इसके अतिरिक्त कोई और बात हो तो उस आदमी में धर्म का नामोनिशान नहीं। एक ही लक्ष्य कि तपना है, हमें तपना है।

प्रत्येक व्यक्ति के मानस में कोई न कोई खोट होता ही है। नहीं खोट हो तो अरहंत हो गये, बुद्ध हो गये। स्वयं जांच कर देखें कि मेरे भीतर भी खोट है। मुझे यह खोट निकालनी है। खोट निकालने के लिए यह विद्या मिली है। जहां पर स्वार्थ की भावना है, अहंकार की भावना है, मैं, मैं, मैं की भावना है, तो खतरनाक है। धर्म से दूर है। हर आदमी सोचे, समझे और फिर ऐसा आदर्श जीवन जीए जिसे देख करके औरों को भी प्रेरणा मिले। हर कोई आकर्षित हो कि इसके द्वारा अनेक लोगों को लाभ हुआ! तभी तो धर्म फैल रहा है। इस फैलाव में मैं कहीं बाधक नहीं बन जाऊं। अपने भीतर जो अहं है, उसको निकालना है। उसको निकालने का लक्ष्य होगा तो कभी बाधक नहीं बनेगा। तो जो-जो आये हैं, साधना कर रहे हैं, वे खूब समझ भी रहे हैं। इसलिए एक बार फिर प्रेरणा देता हूं कि अपने आपको सुधारने का काम पहला काम। अपने आप को सुधार कर दूसरों को कैसे लाभ पहुँचाएं। जो अपना ही लाभ नहीं कर सका, वह दूसरों का क्या लाभ करेगा? एक ही लक्ष्य हो कि मुझे अपने आपको सुधारना है। अपने आपको सुधारे बिना मैं लोगों को धर्म की ओर आकर्षित नहीं कर सकता। मेरे सद्‌गुण देख कर ही लोग खिंचे हुए आये हैं और भविष्य में भी आते रहेंगे।

लोक कल्याण करना है तो पहले अपनी ओर देखें कि मुझमें कहीं अहंभाव तो नहीं। मुझमें कहीं कुछ प्राप्त करने का भाव तो

नहीं है। धर्म में प्राप्त करना नहीं होता, केवल देना होता है। मैं क्या दे सकता हूं, मैं क्या दे सकती हूं। अपना आदर्श जीवन जीकर लोगों को आकर्षित करें, यह सबसे बड़ी देन है। लाखों रुपयों का दान इसके आगे कुछ नहीं है। एक आदमी इतना बदल गया, इतना बदल गया। उसे देख करके लोगों के मन में प्रेरणा जागती है कि अरे! यह कितना बदल गया! मैं भी ऐसे ही बदलूं!

मेरे जो धर्मपुत्र हैं, धर्मपुत्रियां हैं, यह एक धर्म-परिवार है। यह खूब बढ़े, खूब फैले। जैसे बड़े परिवार के नायक के मन में खुशी होती है, वैसी खुशी हमें भी होती है। हो सकता है इस धम्म-परिवार में कुछ ऐसे भी हों जो धर्म को ठीक से नहीं समझे। जो इस अहंकार में काम कर रहे हैं कि मुझे क्या प्राप्त हो जायगा? मुझे क्या मिलेगा? मेरा प्रभुत्व रहेगा कि नहीं? ऐसे निकम्मे लोग थोड़े ही होते हैं। अधिकांश तो अपने आपको सुधारने के लिए ही आते हैं और सुधारते हैं। इसी से तो यह परिवार चल रहा है। इसलिए एक बार फिर सब को प्रेरणा देता हूं कि अपने भीतर देखें और भीतर जो भी खोट हैं, उसे निकालें। अपने आप निकलेगी, क्योंकि खोट निकालने की साधना मिली है ना! भीतर जो मैल होगा वह टिकेगा नहीं। जैसे-जैसे साधना में पुष्ट होते जाओगे, मैल अपने आप बाहर निकलेगा। इस संवेदना से निकलेगा कि उस संवेदना से निकलेगा, पर समता रहेगी तो निकलेगा ही।

बस, एक ही लक्ष्य -- मुझे अपने आपको सुधारना है। मैं जैसा भी हू, जैसी भी हूं-- इससे और अच्छा बनूं, और अच्छी बनूं। बस, मेरा काम हो गया। ऐसा हो तभी इस केंद्र के उद्घाटन की सफलता होगी। दुनिया में और भी केंद्र बन रहे हैं। सब ऐसे ही बने। कैसे अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो! अधिक से अधिक लोगों को धर्म मिले! किसी संप्रदाय में नहीं बँधना है। धर्म का संप्रदाय से कोई लेन-देन नहीं होता। किसी संप्रदाय का हो, किसी जाति, वर्ण, गोत्र का व्यक्ति हो। मनुष्य है ना। बस पर्याप्त है। मनुष्य है तो इस रास्ते पर चल कर अपना कल्याण कर लेगा। उसको अपना नाम बदलने की जरूरत नहीं। उसको अपनी जाति बदलने की जरूरत नहीं। उसका जो संप्रदाय है, उसको बदलने की जरूरत नहीं। अपना मनुष्यत्व जगाना है। एक अच्छा मानव कैसा होना चाहिए। बस, यही लक्ष्य रख कर काम करोगे! किसी व्यक्ति को राजनीति में रुचि हो तो हो। परंतु यह विद्या राजनीति के परे है। इसमें किसी राजनीति का प्रभुत्व नहीं होना चाहिए।

उपरोक्त सिद्धांतों के अनुसार काम करते रहोगे तो सफलता मिलेगी ही। अपने को सुधारने के लिए ही यह विद्या है। मेरे सभी धर्मपुत्रो-धर्मपुत्रियो! शुद्ध धर्म में खूब पको! मिल-जुल कर अपना उत्तरदायित्त्व पूरा करो! तुम्हारा मंगल हो! तुम्हारे साथ अनेकों का मंगल हो! यही मेरा मंगल आशीष है। खूब मंगल हो! खूब कल्याण हो!!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

धम्म पुष्कर, अजमेर में पगोडा-निर्माण

राजस्थान के प्राचीन नगर पुष्कर में स्थित **धम्म पुष्कर** में २९ शून्यागारों वाले पगोडा-निर्माण की योजना बनायी गयी है। इससे निश्चय ही यहां पर गंभीर तपस्या करने वालों को विपुल धर्मलाभ प्राप्त होगा। इस महान पुण्यवर्धक कार्य में भाग लेने के इच्छुक साधक-साधिकएं निम्न प्रकार से संपर्क कर सकते हैं-- श्री रवि तोषणीवाल-०९८२९०७१७७८ तथा श्री अनिल धारीवाल- ०९८२९०-२८२७५. ईमेल- corporate@toshcon.com; बैंक अकाउंट- विपस्सना केंद्र पुष्कर, **इंडियन बैंक,** जयपुर रोड, अजमेर- SB A/c No.: 517444214, IFS Code: IDIB000A006, MIR Code: 305019001

धम्म अजन्ता, औरंगाबाद का नवनिर्माण

विपश्यना केंद्र **धम्म अजन्ता** के लिए १५ एकड़ नई जमीन खरीद कर लगभग ८० साधकों हेतु निर्माणकार्य आरंभ हो गया है। एक धम्मकक्ष बन गया है जिसमें हर रविवार को सामूहिक साधना होती है। सड़क, पानी तथा बिजली उपलब्ध हो चुकी है। जो भी साधक-साधिकाएं इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं--

अजन्ता अन्तर्राष्ट्रीय विपश्यना समिति, 'राजहंस' २ सुराणा नगर, जालना रोड, औरंगाबाद-४३१००३. मोबाईल: ९४२२२-११३४४.

ग्लोबल पगोडा में पालि पाठ्यक्रम - २०१३

विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा में-- **अनिवासीय पाठ्यक्रम-- पालि व्याकरण, सुत्त, सैद्धान्तिक विपश्यना इत्यादि। शिक्षण का माध्यम--** पालि-अंग्रेजी, पालि-मराठी, पालि हिन्दी; **अवधि--** ०१-०२-२०१३ से ३०-९-२०१३ तक (८ मास, सप्ताह में एक बार, ११ से ५ बजे तक); **आवेदन पत्र प्राप्त करने का स्थल और तिथि -** V. R. I., ग्लोबल पगोडा में- १ से २० फरवरी तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - २०-०१-२०१३.

आवासीय पाठ्यक्रम (परियत्ति और पटिपत्ति):--

३० दिवसीय प्रारंभिक पालि-मराठीः अवधि - ०१-०१-२०१३ से ३१-०१-२०१३ तक; **फार्म जमा करने की अंतिम तिथि -** ०१-१२-२०१२;

३० दिवसीय उच्चतर पालि-हिन्दी (V. R. I. इगतपुरी में प्रारंभिक पालि-हिन्दी पाठ्यक्रम **किये छात्रों के लिए) अवधि -** ०१-०५-२०१३ से ३१-५-२९१३ तक; **आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि -** ०१-०४-२०१३;

९० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - ०१-०७-२०१३ से ३०-९-२९१३ तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - १५-५-२०१३; **सब के लिए कंप्यूटर पर आवेदन पत्र --** www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं. **संपर्कः** विपश्यना विशोधन विन्यास (V. R. I.), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-- डॉ शारदा संघवी – फोनः (०२२-२३०९५४१३) ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः s_sanghvi@hotmail.com;** २) श्रीमती बलजीत लाम्बा : फोनः ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुर्लेकरः मोबाईल – ०९८२०५८३४४०.

ग्लोबल विपश्यना पगोडा हेतु कार्पस फंड

ग्लोबल पगोडा के निर्बाध संचालन हेतु एक कार्पस फंड एकत्र किया जा रहा है ताकि भविष्य में इसका रख-रखाव बिना किसी बाहरी दबाव के सफलतापूर्वक होता रहे और म्यंमा में सद्धर्म को सुरक्षित रखने तथा भारत वापस भेजने के लिए सयाजी ऊ बा खिन और म्यंमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का यह **अद्भुत पावन प्रतीक** हजारों वर्षों तक कायम रहे। इस **कार्पस फंड** का उपयोग कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं कर सकता, बल्कि सरकारी बैंक में जमा इस धन के ब्याज से पगोडा का दैनिक व्यय और रख-रखाव संबंधी कार्य पगोडा-संरक्षण के नियमानुसार होता रहेगा। दान भेजने हेतु विवरण इस प्रकार हैः--

१. भारत में कोर बैंकिंग के द्वारा **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन** को दान भेजने के लिए भारत की किसी भी **बैंक ऑफ इंडिया** की शाखा से पैसे भेज सकते हैं। विवरण निम्न प्रकार है--

"Global Vipassana Foundation"
'Axis Bank India', A/C. NO: 911010032397802
SWIFT CODE: AXISINBB062,
IFSC CODE: UTIB0000062
MICR CODE: 400211011,
BRANCH: Malad west branch, Mumbai-400064.

२. भारत के बाहर से दान भेजने वालों के लिए विवरण निम्न प्रकार है-- **(SWIFT transfer to 'Bank of India')**
"Global Vipassana Foundation"
Name of the Bank : **"J P Morgan Chase Bank"**
Address : New York, US,
A/c. No. : 0011407376, Swift: CHASUS33.

चेक/ड्राफ्ट कृपया निम्न पते पर प्रेषित करें--

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, रजि. ऑफिस-- ग्रीन हाऊस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई- 400023. *फोन*- **022-22665926**.

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

आसाम में नये विपश्यना केंद्र का निर्माण

आसाम की राजधानी गौहाटी से २५ किमी. की दूरी पर सुंदर और स्वस्थ वातावरण में लगभग चौंतीस हजार वर्गमीटर का क्षेत्र **विपश्यना साधना केंद्र** के लिए तीस लाख रुपये में खरीदा गया है। पूज्य गुरुदेव ने स्वीकार करते हुए इसे **''धम्म आसाम''** नाम दिया है। जमीन पर निर्माण का कार्य आरंभ हो चुका है। जो भी साधक-साधिकाएं इस पुण्यवर्धक कार्य में भागीदार होना चाहें, वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं।

Name: **Assam Vipassana Trust;** Bank : **State Bank of India**, Branch: **New Guwahati**, Account no: 32575422691, **IFSC:** SBIN0000221, SMS on Mo.09435553065 or Email: **dhammaasama@gmail.com**

सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

२० जनवरी, २०१३, **रविवार**, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क** : **मो.** 09892855692, 09892855945, **फोन नं.:** 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन) **ईमेल Registration:** oneday@globalpagoda.org; Online Regn: www.vridhamma.org

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Andrew & Mrs. Ruth Gordon, New Zealand

नवनियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री केतन शाह, अहमदाबाद
२. श्री प्रेम नारायण शर्मा, नागपुर
३. श्री रुपराव मावंडे, नागपुर
४. श्री शंकर दोराईस्वामी, गोवा
5. Mr. Eric Lataste, France
6-7. Mr. Richard & Mrs. Catherine Galbraith, Spain
8-9. Mr. Charles Lionel Kasturiratne & Mrs. Indrani Tennakoon, Sri Lanka

दीपावली एवं नववर्षाभिनंदन

हर वर्ष की तरह अनेक साधकों की ओर से दीपावली एवं नव वर्ष के अभिनंदन-पत्र मिले हैं। एक-एक को नव वर्ष की मंगल कामना प्रेषित कर पाने का अवसर नहीं मिल पाया, इसलिए 'विपश्यना' पत्रिका के माध्यम से उन्हें तथा अन्य सभी साधक-साधिकाओं को मेरी असीम मंगल मैत्री पहुँचे! नव वर्ष सबके मानस में धर्म की नवज्योत प्रज्वलित करे! दिनोंदिन प्रज्ञा पुष्टतर होती जाय! धर्म धारण करने का मंगलकारी फल प्रभूत हो! प्रभावशाली हो! सबका मंगल हो!

मंगल मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

दोहे धर्म के

कायिक वाचिक मानसिक, मत कर कर्म अशुद्ध।
दुष्कर्मों का फल पके, होवे सुगति निरुद्ध॥
अपने अपने कर्म से, सद्गति दुर्गति पाय।
कौन किसे तारे भला? मत मिथ्या भरमाय॥
अपने अपने कर्म के, हम ही तो करतार।
अपने सुख के दुक्ख के, हम ही जिम्मेदार।
जैसा तेरा आचरण, फल वैसा ही होय।
दुराचरण दुख ही बढ़े, सदाचरण सुख होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

आप आप कै करम स्यूं, आपै निरमळ होय।
आपां नै निरमळ करै, और न दूजो कोय॥
आपै ही खोटा करै, आपै मैलो होय।
खोटी करणी छोड़ कर, आपै उजळो होय॥
सुख दुख अपणै करम रा, कुण दूजो करतार।
जो सुख चावै मानखा! अपणा करम सुधार॥
जग अंधियारो ही करै, राहु-ग्रसित रजनीस।
छुटै पाप री कालिमा, जगत नवावै सीस॥
किसो'क भोळो बावळो, अपणो बैरी आप।
अपणो ही अणहित करै, करै पाप पर पाप॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, कार्तिक पूर्णिमा, 28 नवंबर, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org